सनातन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण

डॉ. रामनरेश दिहुलिया
शिक्षक सहायक (इतिहास)
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उ0प्र0।
Email-ramnareshdehuliya@gmail.com

सारांशिका

प्राचीन भारतीय सभ्यता में पेड़ और वनस्पति का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व हमेशा से प्रमुख रहा है। बुन्देलखण्ड और उसके चारों ओर फैले ग्रामीण क्षेत्रों में पेड़ न केवल जीवन का आधार थे बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक भी थे। वे वन क्षेत्र जो आज अधिक वर्षा के कारण विस्तृत होते जा रहे हैं, कभी घने जंगलों और पेड़ों से समृद्ध थे। आधुनिक काल में तेजी से हो रहे पर्यावरणीय असंतुलन और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण यहां का मौसम भी प्रभावित हुआ है। भारतीय संस्कृति में पेड़ जीवन का प्रतीक माने जाते हैं। वैदिक साहित्य और महाकाव्यों में विभिन्न पेड़ों की उपासना और उनका महत्व स्पष्ट किया गया है। 'वृक्ष देवता' का सिद्धांत प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। आधुनिक विज्ञान भी इस बात की पुष्टि करता है कि पेड़ जलवायु संतुलन में अहम भूमिका निभाते हैं। पर्यावरणीय क्षति से बचने के लिए पेड़ों का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। इसे ध्यान में रखते हुए भारतीय परंपरा 'एक पेड़, एक मां' के सिद्धांत को पुनः जागृत करने का समय आ गया है, ताकि प्रकृति का संतुलन बना रहे और मानवता का अस्तित्व कायम रहे।
मुख्य शब्दः पेड़, भारतीय संस्कृति, पर्यावरणीय संतुलन, धार्मिक महत्व, बुन्देलखण्ड, पेड़ों का संरक्षण।

प्रस्तावना

बाडे से घिरे ग्रामों के चारों तरफ खेत और चाराग्रह तथा उसके पास बंजर भूमि और जगल होते थे बुन्देखलखण्ड में। मृत्यु के पश्चात् जीवन की कल्पना पाप के लिये दण्ड और पुण्य के लिये पुरस्कार के रूप में की गयी है। कुछ परवर्ती मतों में आत्मांतरण का पौधे में आत्माओं के पुनः जन्म लेने का संकेत मिलता है। जलवायु की दृष्टि से इस क्षेत्र में आज की अपेक्षा अधिक वर्षा होती थी जहाँ विस्तृत मैदान और मरूभूमि है वहाँ प्राचीन बुन्देलखण्ड में विशाल वन थे। उत्तर भारत को ग्रामीण तथा बनजारा जीवन से निकलकर नागरिक सांस्कृतियों के विकास की एक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

मौर्य सम्राट अशोक – सड़कों पर मैंने वट वृक्ष लगवाये है जो पशुओं और मनुष्यों को छाया देंगे प्रत्येक नौ मील की दूरी पर आम के बगीचे लगवाये हो और कुंए खुदवाये है। पर्यावरण असंतुलन से मौसम चक्र बिगड़ गया है। वर्ष 2024 फरवरी में गर्मी जैसे गर्मी होने लगी तापमान 35 प्रतिशत बुन्देखलखण्ड का हो गया था वही मई और जून तापमान 49 प्रतिशत तक पहुँच गया यदि समय रहते इस पर न चेता गया तो बुन्देलखण्ड केवल रेगिस्तान में बदल जायेगा।

वृक्ष भारतीय संस्कृति में एक प्राचीन परम्परा रहे है। वेदों के अनुसार 27 नक्षत्रों में 27 पेड़ है जो औषधीय है ये पेड़ जब एक साथ लगाये जाते है। तो उनमें सकारात्मक ऊर्जा बनाने की शक्ति होती है हर नक्षत्र के अधीन कुछ वृक्ष ही अपने जन्म नक्षत्रों वृक्षों के फलों और उससे मिली चीजों के इस्तेमाल से बचिये इसे उपवन में लगाइये और इनका सेवन नहीं सेवा कीजिये। इन पौधों से जो तरंगे प्रभावित होती है। वो आपको निरोगी रखेगी और चित में भी स्थिरता रहेगी।

अश्विनी – कुचला,	भरणी – आंवला कृतिका, गूलर
रोहणी – जामुन,	मृगशीर – खेर
शतभिषा – कदम्ब,	पूर्वाभाद्रप्रदा – आम
श्रवण– आक गूलर.	स्वाति – अर्जुन
उत्तरषादा– कटहल,	उत्तर भाद्रप्रदा – नीम
रेवती – महुआ चित्रा,	पूर्वी फाल्गुनी – पलाश
अश्लेषा – नागचम्पा,	अनुराधा – मौल श्री नकुल

वटमूले स्थितो बृहमा, वटमध्ये जनार्दना, वटागे तु शिवो देव, सावित्री वट संश्रिता।

वट के मूल भाग में बृह्मा मध्य भाग में विष्णु तथा अग्रभाग में शिव स्थित रहते हैं। देवी सावित्री भी इसी वट वृक्ष में निवास करती है।

भारतीय संस्कृति को अरण्य (वृक्षों) की संस्कृति भी कहा जाता है सदियों से मुनियों ने वृक्षों में देवत्व अैर दिव्यत्व का एहसास किया है।

छायामन्यस्य कुर्वति स्वयं तिपर्णन्त चातये फलन्ति ही परार्थ च सत्येते महाद्रुमाः।

वेदों में बहु प्रकारीय उपयोगिता के कारण उन्हें देव तुल्य माना गया है। यजुन औषधि रूप में वनस्पति को नमन गया है।

तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भ भूमिश्च विश्रवधायस विभर्ति ।

सत्य यह है कि वनस्पति जगत पृथ्वी का आवरण है। वृक्षों को काटने का अर्थ पृथ्वी की आयु को कम करना है।

अश्रत्थः सर्व वृक्षाणाम् पीपल आवला और तुलानी इनकी भगवदापूर्वक पूजा करने से भ की पूजा हो जाती है।

भूर्जज्ञ उतान पादो1– ऋग्वेद, 10, 72, 4
हमारी पृथ्वी वृक्ष में उत्पन्न मानी जाती है।
महाभारत के गीता में श्रीकृष्ण स्वयं कहते है।2

अहं कुतुरहः यज्ञः स्वाधाध्यहमोषक्षम, (गीता–9, 16)
रामायण और महाभारत में वृक्षों के प्रति कल्पना की गई है।

सर्वकाम फलाः वृक्षा

देवभूमि में होने वाले भूस्खलन का प्रमुख कारण पेड़ों का काटना है। उत्तराखण्ड एवं जम्मू–कश्मीर का भूस्खलन का कारण सड़क, टर्मिनल बनाने से पेड़ों का सन्तुलन बिगड गया है।

जिस घर में तुलसी की नित्य पूजा होती है। वहाँ पर यमदूत कभी नहीं पधरते।

तुलसी यस्य भवनै तत्यह परि पूज्यते
नद्रह नीवसान्ति कदाचिन यमकिंकर,
अश्रत्थमेक पितुमन्दमेक न्यग्रोधमेक दश पुष्प जातीः ।।

वारह पुराण में उल्लेख किया गया है कि जो पीपल, नीम, वरगद, का एक अनार नारगी के दो, आम के पाँच और लताओं के दश वृक्ष लगाता है। वह कभी भी नारकीय पीड़ा को नहीं वोधिचर्या वनार 3 में वनों और वृक्षों के सम्बन्ध में कहा गया है कि वृक्ष सदैव देते रहने की प्रवृत्ति रखते हैं।

जैन ग्रन्थों में मसालों में श्रगवेर (अदरक) सुंठ (सू.) सवग (लौंग) हरिद्रा (हल्दी) मरिय मिर्च का उल्लेख मिलता है। वृहत्कल्परित (2.24) में फसलों में रेशम ऊर्जा क्षौम (छापरी) सन् का उल्लेख है। ताश्ल (उपासक पृ. 1.9) पुणफली सुपारी (प्रज्ञापना 1.23) खाने का रिवाज था। सागभाजी में बैंगन, ककड़ी मूली, पालक (पालक) करेला (करेल्ल) कद (आलुग) सिंघाडा श्रृंगारक लहाऊ प्याज (पलांडु) सूरज (उत्तराध्ययन सूत 36, 96)

चरक संहिता में अन्नपाल विषयक अध्याय में वर्णित पन्द्रह प्रकार के घानों से चौथा प्रकार शकुनाहत था जो उज्जैन में होता था।4 ब्रह्मपुराण में उज्जयिनी नगरी के बारे में वर्णन मिलता है।

साखू, ताल, तमाल, मौलसिरी, नागकेशर, पीपल कनक चम्पावृक्ष चन्दन, अगर चम्पक, पुनाग, नारियल, कटहल, नारंगी, वडहरलोध सप्तपूर्ण सहिजन, आम, वेर कदम्म शीशम, खैर पारक. अशोक लाल करवीर पीत अर्जुन, भस्मात, सिद्ध अम्रातक, बरगद अश्वत्थ, काश्मर्य, पलाश दवराक, मदार परिजाद, तिन्तिडीक बहेडा, अंगस्थ, शाखोटक, हरी तक, कडोल, मुचुकन्द, हिन्ताल वीजपुरक, केतकीवन, अतियुक्त, कुब्ज, मल्लिका, वाण केला आदि वृक्षों से अन्य प्रकोर के वृक्षों से लता के गुच्छो से नन्दन वन के समान पुष्प गन्धी वृक्षों से भार से सदा अनवत वृक्षों से वह नगरी आवृत है।

ऋतुसहार में उल्लेख मिलता है कि वर्षा ऋतु में निम्नलिखित प्रकार के पौधों एवं फूल होते थे कालिदास ने पर्वत के उपर बढ़ने वाले वृक्षों में देवदास,6 सरल,7 और गुर्जी,8 का उल्लेख किया है।

अमर कोष में नघादिसमीप भूमि एवं वृक्षों का उल्लेख है। मेगस्थनीज ने सिंचाई के विषय में उल्लेख किया है। ई.सन् 150 के महाक्षत्र रूद्रदामन के निरनार लेख में सुदर्शन झील का वर्णन मिलता है।

मेघदूत में जम्बू9 मालवा के मध्य भाग तथा उसके दक्षिण में बहुतायत में पाया जाता है। जम्बू–जामुन के नाम से प्रसिद्ध है। जामुन के कुंजों से होकर देवा नर्मदा बहती है।10 दशार्ण देश के अरण्यों का सारा क्षेत्र जम्मू के परे काले काले फलो से कृष्ण वर्ण का हो जाता था।

11 कालिदास ने रघुवंश के श्लोक में प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन मिलता है।

ऋणो त्वटे उदगत कोमलाकरे।
चितानि नीले हरिणी मखक्षतेः ।।
वतानि वेन्ध्यानि हरित मानस ।
विभिषितान्दगत पल्लवेः द्रथे ।।

रामायण काल में लक्ष्मण को शक्ति लगने बचाने वाली औषधि संजीवनी ही थी महाभारकाल में वरवरीक का मदद के पेड़ के पत्तों को भेदना पर्यावरण का प्रमुख उदाहरण ही पत्तों के बगैर वनस्पति की करचना अन्यायपूर्ण है। भारतीय संस्कृति में कुशा का महत्वपूर्ण स्थान है। साल महत्त्वपूर्ण है। पत्ते के बगैर वृक्ष की परिकल्पना गौड़ है।

निष्कर्ष : भारतीय सनातन संस्कृति पर्यावरण की पोषक मानी जाती है। वृक्षों के महत्व को प्राचीन वेदों, पुराणों, उपनिषदों में पूज्यनीय माना है। वृक्ष को धर्म एवं परम्परा से पुण्य लाभ, नरक के भय से मुक्ति, स्वर्ग की प्राप्ति का मूल साधन माना है। तुलसी के औषधीय गुण सर्वविदित है। बुन्देलखण्ड एवं देश के अन्य प्रांतों में भीषण कार्मी के प्रकोप से बचने के लिये वृक्षों का संरक्षण संवर्धन आवश्यक है। वृक्ष प्राण है। जीवन का आधार है। वर्तमान परिस्थितियों में भारत सरकार ने एक कार्यक्रम एक पेड़ माँ के नाम से एक अच्छी शुरुवात की हो वृक्ष रहेंगे, तो मानव रहेगा अतः वृक्षों का भारतीय परम्परा से जोड़ने का एक अल्प प्रयास है।

सन्दर्भ सूची :

- ऋग्वेद 10, 72, 4
- गीता, 9/6
- वोधिचर्यावनार (8. 40, 43)
- सिंह अखि 5 विक्रम पूर्वोन्त पृ. 240
- चतुर्वेदी सीताराम कालिदास ग्रन्थावली रघुवंश श्लोक, 19. 37 वेद्यदूतम पूर्ण मेध 4. ऋतुसहारम, 3. 13
- रघुवंशम्, 3.36
- कुमार संभव, 1. 9
- कुमार सधव, 1, 7, 55 रघुवंशम्, 4, 73
- मेघदूत पूर्व मेघ, 2
- मेघदूत, पूर्व मेघ, 21
- मेघदूत, पूर्व मेघ, 25